काली-साधना

20

भगवान रुद्र अथवा काल की पत्नि को ही काली कहा जाता है।

✦ उपभेद ✦

भगवती काली के अनेक उपभेद हैं, जिनमें आठ मुख्य हैं–१. **चिन्तामणि काली २. स्पर्शमणि काली ३. सन्ततिप्रदा काली ४. सिद्धिदा काली ५. दक्षिणाकाली ६. कामकला काली ७. हंस काली, और ८. गुह्य काली।**

इन विभेदों में दक्षिणा काली मुख्य कही गयी हैं। वे ही आदि शक्ति-स्वरूपा हैं। दसों महाविद्याओं में भी माँ काली को प्रथम स्थान प्राप्त है। भगवती काली के आकार, शक्ति और स्वरूप का परिमाण करने में कोई भी समर्थ नहीं है, वे अचिन्तनीय हैं। दक्षिण दिशा की स्वामी सूर्य-पुत्र यम काली का नाम सुनकर ही भागता है। इसीलिए इन्हें दक्षिणा काली कहा जाता है। इनका रंग श्याम अर्थात् काला है। सूर्य, चन्द्र और अग्नि-ये तीनों भगवती काली के नेत्र हैं, जिनके द्वारा वे तीनों कालों को निहारती हैं। इनके बाल बिखरे हुये हैं, उनके दाँत बाहर निकले हैं, जिनसे वे बाहर निकली जीभ को दबाये हुये हैं। उनके स्तन उन्नत व स्थूल हैं, जिनसे वे संसार का पालन करने में सक्षम हैं। माँ भगवती अपरिवर्तनीया तथा किरात स्वरूप वाली हैं।

✦ प्रादुर्भाव ✦

प्रत्येक साधक को साधना में रत होने से पूर्व भगवती के लिये प्रयोग किये जाने वाले शब्दों का मूल स्वरूप जानना आवश्यक है। उन्हें शब्दों के मायाजाल से भ्रमित होने की आवश्यकता नहीं है। सर्वप्रथम हम भगवती काली के प्रादुर्भाव पर एक दृष्टि डालें।

भगवती काली को भगवान विष्णु की योगनिद्रा भी कहा गया है।

महर्षि बाल्मीकि की 'गुप्त रामायण' के अनुसार रावण से युद्ध करते हुए एक बार श्री राम मूर्च्छित हो गये। उन्हें मृत जानकर सीता जी को अत्यन्त क्रोध आ गया। इस अति क्रोध के कारण उनका वर्ण काला हो गया और उन्होंने रावण का वध कर डाला।

DR.RUPNATHJI (DR.RUPAK NATH J)

www.astrology-tantra.com

दूसरी दृष्टि के अनुसार कल्प के अन्त में जब सम्पूर्ण सृष्टि का विलय हो रहा था, उस समय भगवान विष्णु शेषनाग-शैय्या पर योगनिद्रा से निद्रामग्न हो गये। उसी समय उनके कानों के मैल से मधु, कैटभ नाम के दो भयानक राक्षस उत्पन्न हुए और ब्रह्मा जी को खाने के लिए आगे बढ़ने लगे। भगवान विष्णु के नाभि कमल पर स्थित ब्रह्मा जी यह देखकर भयभीत हो गये और उन्होंने भगवान विष्णु को पुकारा, परन्तु विष्णु जी की निद्रा नहीं खुली। तब उन्होंने आद्य भवानी की स्तुति की। इस पर भगवान विष्णु के मुख, नेत्र, हृदय, बाहु व वक्षस्थल से एक तेज निकला, जिसने माँ काली का रूप ग्रहण किया और ब्रह्मा जी की रक्षा हेतु खड़ी हो गयीं।

इसी प्रकार अन्य और भी वर्णन उनके प्रादुर्भाव के सम्बन्ध में मिलते हैं, परन्तु जब वे अजन्मा और नित्या है, तब उनके प्रादुभार्व के विषय में कुछ भी कहना निरर्थक है। केवल यही कहना पर्याप्त होगा कि देवकार्य को उद्यत वे विभिन्न रूपों में अवतरित होती हैं, और उसी रूप में जानी जाती हैं। दुर्गा सप्तशती के आठवें अध्याय में वर्णित महात्म्य के अनुसार रक्तबीज का वध करते समय क्रोध करने के कारण चण्डिका का मुँह क्रोध से काला पड़ गया और उनकी भौंहें टेढ़ी हो गयी। उसी समय उनके ललाट से काली देवी का प्रादुर्भाव हुआ और उन्होंने खप्पर में रक्तबीज का रक्त भर-भर कर पिया। इस प्रकार रक्तबीज का अन्त हो सका, जिससे देवता अत्यन्त प्रसन्न हुए।

वस्तुतः उनके स्वरूप के विषय में **"विश्वसार तन्त्र"** में किये गये वर्णनों के अनुसार-

वे चार भुजाओं वाली, कृष्णवर्णा और मुण्डमाला से विभूषित हैं। वे दोनों दाहिने हाथों में खड़ग व नीलकमल व बायें दोनों हाथों में कतरनी तथा खप्पर धारण किये हुए हैं। उनके सिर पर दो जटाएँ सुशोभित हैं, जिनमें से एक आकाश को छू रही है। उनके कण्ठ में मुण्डमाला और वक्षस्थल पर नरहार सुशोभित है। उनके नेत्र लाल हैं। अपनी कमर में वे काले वस्त्र तथा बाघाम्बर धारण किये हुए हैं और महादेव के हृदय पर बायां पैर रखे हुए हैं। उनका दायां पैर सिंह की पीठ पर स्थित है। वे आसव पान किये हुए, भयंकर शब्द करने वाली और भयानक आकृति वाली हैं।

इस प्रकार उनका स्वरूप भयानक प्रतीत होता है, परन्तु वे भक्तों के भय का नाश करने वाली तथा पूरे चराचर विश्व की स्वामिनी हैं। तन्त्र से सम्बन्धित सभी प्रक्रियाओं की वे आधार हैं।

शास्त्रानुसार मात्र काली साधना से ही जीवन की सभी इच्छाओं की कामनापूर्ति व वांछित फल प्राप्त हो जाते हैं।

स्वयं गुरु गोरखनाथ ने भी कहा है कि **"यदि जीवन में अवसर मिल जाए, तो प्रयत्न करके भी काली साधना सम्पन्न करनी चाहिए। यदि साधक ऐसा अवसर आने पर चूक जाता है, तो उसके समान कोई दुर्भाग्यशाली नहीं कहा जा सकता।"**

काली साधना के द्वारा मनुष्य पूर्ण रोगों से छुटकारा पाकर बली व सक्षम होता है। शत्रुओं का मान-मर्दन, विजय-प्राप्ति, मुकदमों में विजय तथा चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति इसी साधना के द्वारा सम्भव है।

इस साधना को कोई भी स्त्री, पुरुष, गृहस्थ, योगी और सन्यासी कर सकता हैं, जिसका प्रभाव व प्रमाण शीघ्र ही साधक के सामने आ जाता है।

✦ विशेष अर्थ ✦

श्मशान का अर्थ-

भगवती काली को श्मशान वासिनी कहा गया है। इसका अर्थ हमें इस प्रकार लेना चाहिए कि व्यक्ति पंचभूतों से बना है। श्मशान में मनुष्यों का शवदाह किया जाता है, जिससे पाँचों तत्व ब्रह्म में लीन हो जाते हैं। भगवती आद्यकाली ब्रह्मस्वरूपा है। इस प्रकार पाँचों तत्व उन्हीं में विलीन हो जाते हैं। इस प्रकार उनका निवास श्मशान कहा गया है।

इसे हम दूसरे अर्थ में भी प्रयुक्त करते हैं। यथा-व्यक्ति के राग, द्वेष, लोभ, मद आदि के भस्म होने का स्थान

DR.RUPNATHJI (DR.RUPAKNATH)

www.astrology-tantra.com

प्राणी का मन है। इस प्रकार यह भी श्मशान का ही स्वरूप है। भगवती उसी हृदय में निवास करती है, जहाँ ये विकार ना हो, अर्थात् नष्ट हो गये हों, इस प्रकार वह श्मशान निवासिनी है।

✦ चिता का अर्थ ✦

चिता का अर्थ है, ज्ञान की अग्नि का निरन्तर ज्वलन। जब तक हृदय में ज्ञान की अग्नि की निरन्तरता बनी रहती है, भगवती की प्राप्ति व सानिध्य तभी तक सम्भव है। अन्यथा की दशा में, उनकी प्राप्ति नहीं की जा सकती। अतः साधक को मन में ज्ञान की अग्नि रूपी चिता हर समय जलाए रखना चाहिए।

✦ शव-आसन ✦

भगवती काली का आसन शव को कहा गया है। कहीं-कहीं आपने देखा होगा कि भगवान शिव को आसन के रूप में भी भगवती प्रयुक्त करती हैं, परन्तु शिव भी तब तक शिव है, जब तक उनमें शक्ति है। शक्ति के अभाव में शिव भी "शव" तुल्य हैं। जब शिव से शक्ति अलग हो जाती है, तो उसे शक्ति प्रदान करने हेतु वे शव पर आसन लगाकर अपनी कृपा प्रदान करती हैं। इसी प्रकार मृत्यु के उपरान्त व्यक्ति की शक्ति समाप्त हो जाती हैं और व्यक्ति शव मात्र रह जाता है। तब भगवती काली शवारूढ़ा होकर उसे इस संसार से मुक्त कर देती है।

✦ मुक्तकेशी का अर्थ ✦

भगवती काली के केश बिखरे हुए हैं अर्थात् उन्हें केशों को सवारने की भी सुधि नहीं है। श्रंगार की उन्हें कोई चिन्ता नहीं, जो कि विलासिता है। इस प्रकार वे विलासिता के विकार से मुक्त हैं। अतः भगवती की साधना करने वाले साधक को भी सभी विलासिताओं से मुक्त रखना ही उद्देश्य मात्र है।

त्रिनेत्रा–भगवती काली त्रिनेत्रा अर्थात् तीन नेत्रों वाली है। अग्नि, सूर्य और चन्द्र, ये ही भगवती के तीन नेत्र हैं। अर्थात् भूत, भविष्य और वर्तमान को वे इन्हीं त्रिनेत्रों द्वारा विलोकित करती हैं।

✦ उन्नत-पीन-पयोधरा ✦

माँ काली के स्तनों को उन्नत, बड़े व ठोस कहा गया है। तात्पर्य यह कि वे अपने स्तनों से तीनों लोकों का पालन करने में सक्षम हैं। अपने भक्तों को इन्हीं स्तनों से अमृत का पान कराती हैं।

यौवनवती–भगवती काली को नित्य यौवना कहा गया है अर्थात् समय का उन पर कोई प्रभाव नहीं होता। वे अजन्मा है, नित्या है, अपरिवर्तनशील हैं। आदि भी वही हैं, और अन्त भी वही हैं। ऐसी दशा के कारण ही उन्हें नित्ययौवनवती कहा गया है।

✦ महाशुक्रा ✦

पुरुष को सबलता, ओजता, तेजस्विता आदि गुण शुक्र के कारण ही प्राप्त होते हैं। भगवती काली की आराधना से भी इन्हीं गुणों का विकास होता है। इस प्रकार वे शुक्र प्रदान करने वाली हैं अर्थात् महाशुक्रा हैं। उनके पास शुक्र का असीम भण्डार है।

✦ भगमालिनी ✦

"भग" अर्थात् योनि अर्थात् शक्ति के बिना किसी भी जीव का जन्म सम्भव नहीं है। माँ काली शक्ति रूपा अर्थात् सभी प्राणियों को जन्म देने वाली कही गयी हैं। जन्मदात्री के रूप में अर्थात् संसार की आधार-भूता होने के कारण ही ये भग मालिनी हैं।

✦ लिंगस्था ✦

किसी भी प्राणी की उत्पत्ति का मूल शुक्र और रज हैं। रज शक्ति-रूपा तथा शुक्र शिव-रूप हैं। इन्हीं के संयोग से संसार जन्मा है। शिव और शक्ति के मिलन से ही प्राणी जन्म लेता है। अतः दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं।

DR.RUPNATHJI (DR.RUPAK NATH)

www.astrology-tantra.com

अतः भगवती अर्थात् "भग"-वती शक्ति, शिव-स्वरूप अर्थात् लिङ्ग को धारण करने वाली हैं। इस प्रकार शक्ति और शिव यानि योनि (भग) और लिङ्ग ही इस प्रकृति के मूल आधार हैं, क्योंकि दोनों के संयोग से ही पृथ्वी पर जीवन है।

✦ पूजन-विधि ✦

साधना हेतु साधक को पूर्ण पवित्र होकर, पवित्र आसन पर बैठना चाहिए। अपने पास पञ्चोपचार अथवा षोडशोपचार हेतु सामग्री व जल का लोटा रखें। स्वस्तिवाचन पाठ करने के उपरान्त अग्रिम पूजन आरम्भ करें। सर्वप्रथम सङ्कल्प लें। सङ्कल्प हेतु मंत्र पहले ही बताया जा चुका है। फिर भगवती का ध्यान करें–

✦ ध्यान ✦

शवारूढ़ाम्महाभीमांघोर दष्ट्रां हसन्मुखीम।
चतुर्भुजांषड्मुडंवराभयकरां शिवाम्॥
मुंडमालाधरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बराम्।
एवं संचिन्तयेत्काली श्मशानालयवासिनीम्॥

ध्यान के उपरान्त भगवती काली का आह्वान करें–

✦ आह्वान ✦

स्वागतं ते महामाये चण्डिके सर्व मङ्गले।
पूजां गृहाण विविधां, सर्व कल्याण कारिणी।

इसके उपरान्त, पाद्य, अर्घ्य, आसन, स्नान, वस्त्र, पुष्प, गन्ध, रोली, सिन्दूर, नैवेद्य, प्रदक्षिणा, पुष्पाञ्जलि, मन्त्र पुष्पाञ्जलि आदि से आराधना करें। फिर विनियोग आदि करें।

✦ विनियोग ✦

अस्य श्री दक्षिण कालिका मंत्रस्य, भैरव ऋषि, उष्णिक छन्दः, दक्षिण कालिका देवता, ह्रीं बीजं हूं शक्तिं, क्रीं कीलकं, मम अभीष्ठ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

✦ ऋष्यादि न्यास ✦

ॐ भैरव ऋषये नमः शिरसि।	(सिर का स्पर्श)
उष्णिक छन्दसे नमः मुखे।	(मुख का स्पर्श)
दक्षिण कालिका देवतायै नमः हृदि।	(हृदय का स्पर्श)
ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये।	(गुह्य प्रदेश का स्पर्श)
हूं शक्तये नमः पादयो।	(पैरों का स्पर्श)
क्रीं कीलकाय नमः नाभौ।	(नाभि का स्पर्श)
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।	(सम्पूर्ण अङ्गों का स्पर्श)

✦ करन्यास ✦

ॐ क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।	(अंगूठे का स्पर्श)
ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः।	(तर्जनी का स्पर्श)
ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां नमः।	(मध्यमा का स्पर्श)
ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां नमः।	(अनामिका का स्पर्श)
ॐ क्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	(कनिष्ठा का स्पर्श)
ॐ क्रः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।	(हथेलियों के दोनों ओर स्पर्श)

DR.RUPNATHJI (DR.RUPAK NATH)

www.astrology-tantra.com

✦ **हृदयादि न्यास** ✦ ✦

ॐ क्रां हृदयाय नमः। (हृदय का स्पर्श)

ॐ क्रीं शिरसे स्वाहाः। (सिर का स्पर्श)

ॐ क्रूं शिखायै वषट्। (शिखा का स्पर्श)

ॐ क्रैं कवचाय हुम्। (दोनों हाथों से कवच बनाएं)

ॐ क्रौं नेत्र त्रयाय वौषट्। (दोनों नेत्रों का स्पर्श)

ॐ क्रः अस्त्राय फट्। (तीन बार चुटकी बजाकर दाहिने हाथ की प्रथमा व मध्यमा से बायीं हथेली पर तीन बार ताली बजाएं)

अब कवच पाठ करें। साधक चाहें तो मन्त्र जाप के उपरान्त भी कवच पाठ कर सकते हैं—

✦ **मूल मन्त्र** ✦

"क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके!
क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।"

"दक्षिण कालिका" का यह मन्त्र सभी मन्त्रों में प्रधान है, जिसके वर्णों का अर्थ निम्नवत् है—

क्रीं क्रीं क्रीं—ये तीनों बीज सृष्टि, स्थिति एवं लय को बद्ध करने वाले हैं।
ह्रीं ह्रीं—ये दोनों बीज भी सृष्टि, स्थिति तथा लय को बद्ध करने वाले ही हैं।
हूं हूं—ये दोनों बीज शब्द ज्ञान को देने वाले हैं।
दक्षिण कालिके—सम्बोधन सूचक है, जिससे सामीप्य का आभास होता है।
स्वाहा—यह संसार का मात्र स्वरूप है, जिससे सभी पापों का नाश होता है।

इस मन्त्र के पुरश्चरण हेतु साधक को दो लाख जप करने चाहिए। दिन में पवित्र होकर एक लाख की सख्या में जप करें और एक लाख जप रात्री में करने चाहिये। फिर उनका दशांश होम, होम का दशांश तर्पण व तर्पण का दशांश मार्जन करें। जाप के उपरान्त मार्जन के दशांश का ब्राह्मणों को भोजन कराकर तृप्त करें। साधना में रुद्राक्ष की माला को प्रयोग करें।

कवच

शिरो मे कालिका पातु, क्रींकारैकाक्षरी परा।
क्रीं क्रीं क्रीं मे ललाटं च कालिका खड्गधारिणी॥
हुं हुं पातु नेत्रयुग्मं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुति द्वयं।
दक्षिणे कालिके पातु घ्राणयुग्मं महेश्वरी॥
क्रीं क्रीं क्रीं रसनां पातु हूं हूं पातु कपोलकम्।
वदनं सकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहा स्वरूपिणी॥
द्वाविंशत्यक्षरी स्कन्धौ महाविद्या फलप्रदा।
खड्गमुण्डधरा काली सर्वाङ्गमभितोऽवतु॥
क्रीं हुं ह्रीं त्रयक्षरी पातु चामुण्डा हृदयं मम।
ऐं हुं ॐ ऐं स्तनद्वन्द्वं ह्रीं फट् स्वाहा कुकुत्स्थलम्॥
अष्टाक्षरी महाविद्या भुजौ पातु सकर्तृका।

DR.RUPNATHJI (DR.RUPAK NATH)

www.astrology-tantra.com

क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं करौ पातु षडक्षरी मम।।
क्रीं नाभिंमध्यदेशं च दक्षिणे कालिकेऽवतु।
क्रीं स्वाहा पातु पृष्ठन्तु कालिका सा दशाक्षरी।।
क्रीं मे गुह्यं सदापातु कालिकायै नमस्ततः।
सप्ताक्षरी महाविद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता।।
ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके हूं हूं पातु कटिद्वयम्।
काली दशाक्षरी विद्या स्वाहान्ता चोरुयुग्मकम्।।
ॐ ह्रीं क्रीं मे स्वाहा पातु जानुनि कालिका सदा।
काली हृदय विधेयं चतुवर्गफलप्रदा।।
क्रीं हूं ह्रीं पातु सा गुल्फं दक्षिणे कालिकेऽवतु।
क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा पदं पातु चतुर्दशाक्षरी मम।।
खड्गमुण्डधरा काली वरदाभयधारिणी।
विद्याभिः सकलाभिः सा सर्वाङ्गमभितोऽवतु।।
काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी।
विप्रचित्ता तथोग्रोग्रप्रभा दीप्ता धनत्विषा।।
नीला घना वलाका च माता मुद्रामित प्रभा।
एताः सर्वाः खड्गधरा मुण्डमाला विभूषिता।।
रक्षन्तु मां दिग्विदिक्षु ब्राह्मी नारायणी तथा।
माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चापराजिता।।
वाराही नारसिंही च सर्वाश्चामितभूषणाः।
रक्षन्तु स्वायुधैर्दिक्षु मां विदिक्ष यथा तथा।।
इति ते कथितं दिव्यं कवचं परमाद्भुतम्।
श्री जगन्मङ्गल नाम महामन्त्रौधविग्रहम्।।

मारण-प्रयोग

✦ ध्यान ✦

ध्यायेत् कालींमहामायां त्रिनेत्रां बहुरुपिणीम्।
चतुर्भुजां लोलजीह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम्।।
नीलोत्पलदलश्यामां शत्रु सघं विदारिणीम्।
नरमुण्डं तथा खड्गकमलं वरदं तथा।।
विभ्राणां रक्तवसनां घोरदृष्टांस्वरुपिणीम्।
अट्टाहटहासनिरतां सर्वदा च दिगम्बराम्।।
शवासनस्थितां देवीं मुण्डमालाविभूषिताम्।
इति ध्यात्वा महादेवीं ततस्तु कवचं पठेत्।।

अर्थात्—भगवती काली महामाया काले रंग की तीन नेत्रों वाली, चार भुजाओं वाली, जिनकी जिह्वा बाहर निकली हुई है और वे पूर्णचन्द्रमा के समान कान्तिमयी है, ऐसा ध्यान करें। वे नीलकमल के समान श्याम रंग की, शत्रुओं के दल का

DR RUPNATH JI (DR.RUPAK NATH)

www.astrology-tantra.com

विनाश करने वाली, अपने हाथों में नरमुण्ड, खड्ग, कमल तथा खप्पर लिए हुए हैं। वे लाल वस्त्र पहने, भयंकर प्रतीत होने वाली, जोरों से अट्टहास करती हुई सर्वदा नग्नदेह वाली हैं। शव पर आसन लगाये, नरमुण्डों की माला से सुशोभित रहने वाली भगवती काली का ऐसा ध्यान करते हुए इस कवच का पाठ करें–

कवच

ॐ कालिका घोररुपादय सर्वकामप्रदाशुभा।
सर्वदेवस्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे॥
ॐ ह्रीं स्वरुपिणी चैव ह्रीं ह्रीं सं हं गिनी तथा।
ह्रां ह्रीं क्षैं क्षौं स्वरूपा सा सर्वदा शत्रुनाशिनी॥
श्रीं ह्रीं ऐं रुपिणी देवी भवबन्धनविमोचिनी।
यथा शुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भश्च महासुरः॥
वैरिनाशाय वन्दे तां कालिकां शङ्करप्रियाम्।
ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नारसिंहिका॥
कौमारी श्रीश्च चामुण्डा खादयन्तु मम विद्विषः।
सुरेश्वरी घोररूपा चण्डमुण्ड विनाशिनी॥
मुण्डमालाधृतांगी च सर्वतः पातु मां सदा।
ह्रीं ह्रीं कालिके घोरदृष्टां रुधिरप्रिये॥

✦ भावार्थ ✦

हे घोररूपा, सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाली, देवताओं द्वारा वन्दनीया माँ काली! मेरे शत्रु का नाश करो। ह्रीं स्वरूपा, ह्रीं ह्रीं, सं हं बीज वाली, ह्रीं क्षैं क्षौं स्वरूपा महाकाली, सदैव शत्रुओं का शमन करने वाली हैं। श्रीं ह्रीं स्वरूपा भगवती, भव-बन्धन से छुड़ाने वाली हैं, जिस प्रकार उन्होंने शुम्भ-निशुम्भ जैसे दैत्यों का भी वध किया। वैसे ही शत्रुओं के नाश के लिए भगवान शङ्कर की प्रिया महाकाली! आपको मैं प्रणाम करता हूँ। हे ब्राह्मी! हे शैवी! हे वैष्णवी! हे वाराही नारसिंही रूपा! मैं आपको प्रणाम करता हूँ। हे कौमारी! श्री चामुण्डा सुरेश्वरी! भंयकर रूप धारणी, चण्ड-मुण्ड विनाशिनी माँ! मेरे शत्रुओं का नाश करो। ह्रीं रुपिणी, रुधिरप्रिया, रौद्र रुपिणी, घोरदृष्टा, नरमुण्डों की माला धारण करने वाली माँ काली चारों ओर से मेरी रक्षा करो।

मन्त्र

"ॐ रुधिर पूर्ण वक्त्रे च रुधिरावितस्तिनि मम शत्रुन् खादय-खादय, हिंसय-हिंसय, मारय-मारय, भिन्धि-भिन्धि, छिन्धि-छिन्धि, उच्चाटय-उच्चाटय, द्रावय-द्रावय, शोषय-शोषय, यातुधानिके चामुण्डें ह्रीं ह्रीं वां वीं कालिकाय सर्वशत्रुन् समर्पयामि स्वाहा। ॐ जहि-जहि, कटि-कटि, करि-करि, कटु-कटु, मर्दय-मर्दय, मोहय-मोहय, हर-हर, मम रिपुन् ध्वंसय-ध्वंसय, भक्षय-भक्षय, त्रोटय-त्रोटय, यातुधानिका चामुण्डायै सर्व जनान् राजपुरुषान, राजश्रियं देहि-देहि, नूतनं-नूतनं धान्यं जक्षय-जक्षय क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षों स्वाहा।"

उक्त मन्त्र एवं कवच रावणकृत "उड्डीश महातन्त्र" में वर्णित है। इस कवच का पाठ नित्य करने से शत्रुओं का नाश होता है, वे रोगी होकर श्रीहीन तथा पुत्रहीन हो जाते हैं। इस कवच का एक हजार पाठ करने से सिद्धि प्राप्त होती है और रिपु-दमन व मारण सफल होता है। इस कवच के और भी प्रयोगों का वर्णन किया गया है, यथा–

DR.RUPNATHJI (DR.RUPAK NATH)

www.astrology-tantra.com

✦ अन्य प्रयोग ✦

श्मशान से चिता के कोयले लाकर, शत्रु के पैरों से स्पर्श किये हुए जल को लेकर, कोयलों को उसमें पीसकर स्याही बनावें। अब एक लोहे की कलम लेकर उस स्याही से शत्रु की कुरूप मूर्ति बनाकर उसका सिर उत्तर की तरफ तथा पैर दक्षिण की तरफ करें। उस मूर्ति के हृदय पर हाथ रखकर उपर्युक्त कवच व मंत्र का पाठ करें। मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा कराकर उसके कण्ठ पर तीक्ष्ण शस्त्र से प्रहार करें तो शत्रु की मृत्यु हो। जलते हुए अंगार में मूर्ति को तपायें तो तो शत्रु को तीव्र ज्वर हो। यदि उसके बायें पैर को मिटा दें तो निश्चय ही शत्रु दरिद्र हो जाता है। यह कवच शत्रुओं का नाश करने वाला, उनको वशीकृत करने वाला, ऐश्वर्यदायी एवं पुत्र पौत्रों की वृद्धि करने वाला है। इससे शत्रुओं का उच्चाटन भी होता है अथवा वह सेवक की भांति आज्ञाकारी हो जाता है।

卐 卐 卐

DR.RUPNATHJI (DR.RUPAK NATH)

www.astrology-tantra.com